एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

सरसों की फसल में रोग एवं कीटों का प्रभाव एवं नियंत्रण

(*आदित्य तिवारी[1] एवं श्रेया तिवारी[2])

[1]ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी, किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग, सतना, म.प्र.

[2]एम.एस.सी. छात्रा (कृषि प्रसार), म. गाँ. चि. ग्रा. वि., चित्रकूट, सतना, म.प्र.

*संवादी लेखक का ईमेल पता: adityatiwari1999@gmail.com

सरसों रबी सीजन की प्रमुख तिलहनी फसल है। सरसों का भारत की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान है। सरसों की खेती बहु फसलीय या मिश्रित रूप में की जा सकता है। भारत में सरसों की खेती मुख्य रूप से मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, गुजरात, बिहार आसाम, झारखण्ड, पंजाब में की जाती है। खाद्य तेल के रूप में सरसों की मॉग अधिक होने के कारण यह किसानों के लिए मुनाफे की खेती है। वैज्ञानिक अनुसंधानों के आधार पर उन्नतशील प्रजातियों एवं उन्नत तकनीक अपनाकर सरसों की खेती से अन्य फसलों की तुलना में कम व्यय पर अधिक लाभ प्राप्त करने की असीम सम्भावनायें है। कीट एवं रोगों का प्रभाव सीधे सरसों के उत्पादन पर होता है। यदि समय पर इन रोगों और कीटों की पहचान एवं नियंत्रण आवश्यक है।

उन्नत किस्मों का चुनाव–

उपज एवं तेल की अधिक मात्रा प्राप्त करने हेतु अनुशंसित किस्मों का प्रयोग किया जाना चाहिये।

जवाहर सरसो 2,3– यह किस्म सिंचित एवं असिंचित क्षेत्रों के लिये अच्छी रहती है। यह किस्म पाला एवं मृदुरोमिल आसिता रोग के प्रति सहनशील है। सफेद फफोला, तना सड़न, झुलसन, चूर्णिल एवं मृदुरोमिल आसिता के प्रति मध्यम प्रतिरोधिता है। इस किस्म की सरसों में माहू एवं झुलसन रोग का प्रभाव कम होता है।

नवगोल्ड पीली सरसों– यह फसल सफेद फफोला, झुलसन रोग एवं तना सडन रोगों के प्रति मध्यम प्रतिरोधी के साथ पिछेती बुवाई के लिये उपयुक्त रहती है।

आशीर्वाद– देर से बुवाई के लिये उपयुक्त है। श्वेत कीट्ट, पत्तियों एवं फली के झुलसन रोग के प्रति प्रतिरोधी है।

पूसा सरसों 21– झुलसन रोग, सफेद फफोला, तना सड़न, चूर्णिल एवं मृदुरोमिल आसिता का प्रकोप कम होता है।

पूसा सरसों 27– समय से बुवाई के लिये उपयुक्त रहती है।

माया– समय से बुवाई के लिये यह किस्म उपयुक्त है। श्वेत कीट्ट के प्रति प्रतिरोधी है एवं उच्च तापमान के प्रति सहनशील है।

कोरल 432– सिंचित अवस्था एवं बाजरा सरसों फसल चक्र हेतु अच्छी मानी जाती है।

सीएस 56– यह फसल पिछेती बोनी के लिये अच्छी रहती है।

एनआरसीएचबी 101– यह समय से बुवाई एवं देर से बुवाई दोनों के लिये उपयुक्त रहती है।

आरजीएन 73– इसकी प्रमुख विशेषता फलियों एवं पौधे के गिरने के प्रति प्रतिरोधिता है।

बीजशोधन : बीज जनित बीमारियों से नियंत्रण तथा अच्छी पैदावार हेतु बीज का शोधन आवश्यक है। श्वेत किट्ट एवं मृदुरोमिल आसिता के प्रकोप से बचाव हेतु मेटालेक्जिल 6 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करना उपयुक्त रहता है।

कीट का प्रभाव एवं नियंत्रण–

पेन्टेड बग या चितकबरा कीट– चितकबरा प्रौढ़ कीट के शरीर के उपर काले व चमकीले नारंगी रंग के धब्बे होते हैं। इन पर भूरी धारियॉ पाई जाती है। शिशु कीट का रंग चमकीला नारंगी और तीसरी व चौथी अवस्था का रंग लाल होता है। इसका प्रकोप फसल के अंकुरण के तुरंत बाद होता है। यह कीट बुवाई के समय एवं कटाई के समय अधिक नुकसान पहुंचाते हैं यह चितकबरा कीट छोटे छोटे पौधों को प्रारम्भिक अवस्था में अधिक हानि पहुंचाते है। पेन्टेड बग कीट के शिशु और प्रौढ़ दोनों ही पत्तियों के रस चूस लेते हैं जिससे पौधे कमजोर व पीले पड़कर सूख जाते हैं।

कीट नियंत्रण हेतु गर्मियों में गहरी जुताई आवश्यक है। इस कीट के प्रभावी होने पर बुवाई के 3 से 4 सप्ताह बाद पहली सिंचाई कर देना चाहिये जिससे मिटटी के अन्दर दरें के कीट मर जाते हैं। छोटी फसल में कीट का प्रकोप होने पर क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत घूल 15 से 20 किग्रा प्रति हे. की दर से प्रातः कालीन भुरकाव करना चाहिये। कीट का प्रकोप अधिक होने पर मैलाथियान 50 ईसी की 500 मिली मात्रा को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिडकाव करना उचित रहता है।

माहू (चेंपा /मोयला/एफिडा) कीट – माहू या चेंपा कीट सरसों का प्रमुख कीट है। यह कीट पंखहीन या पंखयुक्त हल्के स्लेटी या हरे रंग के 1.5–3.0 मिमी का कोमल शरीर वाला कीट होता हैं। प्रायः यह कीट दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में फैलता है एवं इसका प्रकोप मार्च तक रहता है। यह समूह में रहती हैं व तीव्रता से वंशवृद्धि करते हैं। यह कीट पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूलों एवं नई फलियों के रस चूसकर फसल को अत्यधिक हानि पहुंचाते हैं तथा मधुस्राव करते हैं। इस मधुस्वाव पर काले कवक का प्रकोप हो जाता है तथा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया बाधित होती है।

माहू कीट के नियंत्रण हेतु किसान को समय से अगेती बुवाई करना चाहिये। प्रकोपित फसल की टहनियों को 2–3 बार तोडकर जमीन का गाड दे। नीम की खली का 5 प्रतिशत घोल का छिड़काव नियंत्रण के लिये लाभकारी है। यदि माहू का प्रकोप अधिक हो तो आक्सीडेमेटान मिथाइल 25 ईसी या डाइमेथेएट 30 ईसी 500 मिली लीटर दवा 500 लीटर प्रति हेक्टेयर पानी में घोलकर सायंकाल छिडकाव करें।

आरा मक्खी – यह कीट मक्खी पीले नारंगी रंग की ततैया की तरह दिखती है। इसकी सर व टागे काली होती हैं। इसकी सुंडी गहरे हरे रंग की होती हे तथा पीठ पर पांच लंबवत धारियॉ होती हैं। इसकी काली शिराये व पंख धूसर रंग के होते हैं। इसका अंडरोपक दांतेदार व आरी के समान होता है इसीकरण इसे आरा मक्खी कहते हैं। यह मुख्यरूप से अक्टूबर–नवम्बर में ही हानि पहुंचाते हैं। यह कीट पत्तियों में छेंद कर देती है। मध्य जवायु और कम आर्द्रता इसकी वंशवृद्धि के लिए अनुकूल रहता है। बचाव हेतु खरपतवार नियंत्रण करें। गर्मियों में गहरी जुताई करें तथा एक माह की फसल में सिंचाई करें। कीट का प्रकोप होने पर मैलाथियान 50 पायस सांद्रण की एक लीट मात्रा को 500 लीटर पानी में घेलकर प्रति हे. की दर छिडकाव करें।